

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश को मई, 1977 के दौरान शंकुवृक्ष अनुसंधान केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया था ताकि यह सिल्वर फर और स्प्रूस के प्राकृतिक पुनर्जनन के साथ जुड़ी समस्याओं पर अनुसंधान कर सके। केन्द्र ने इसके लिए प्रौद्योगिकी का विकास किया और इसे राज्य वन विभागों में हस्तान्तरित किया। 1987 में वानिकी अनुसंधान के पुनर्गठन और भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के गठन के साथ इस केन्द्र के उत्तरदायित्व को हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू तथा कश्मीर के पश्चिमी हिमालयी राज्यों में वानिकी अनुसंधान की समस्याओं का समाधान करने की जिम्मेदारी के साथ शंकुधारी एवं पृथुपर्णी वनों के पुनर्जनन पर अध्ययन करने के अलावा सिल्वर फर और स्प्रूस के पुनर्जनन से लेकर शीत रेगिस्तानों के पारि-पुनर्वास, खनित क्षेत्रों के पुनर्वास करने तक बढ़ाया गया। इस केन्द्र का 1998 में पुनःनामकरण हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के रूप में किया गया।

वर्ष 2005–2006 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : खनित क्षेत्रों के वनीकरण के लिए उपयुक्त मॉडलों का विकास (एच एफ आर आई-18/01 (ई बी सी-07)/प्लान/2002-2006)

उपलब्धियां : खनित क्षेत्रों के वनीकरण के लिए उपयुक्त मॉडलों का विकास करने के दृष्टिकोण के साथ यह अनुसंधान परियोजना शुरू की गई थी। उद्देश्यों के निष्पादन हेतु शुरुआत में खनित क्षेत्रों की वानस्पतिक तथा अन्य संबंधित स्तर के मूल्यांकन के लिए पादपी और पारिस्थितिकीय सर्वेक्षण किए गए।

पांच वृक्ष प्रजातियों यथा – बॉहिनिया वेरिगाटा, रॉबिनिया स्यूडेकेसिया, यूकेलिप्टस हाइब्रिड, ग्रीबिया आप्टिवा और तूना सिलिएटा के प्रदर्शन पर चूना खान ढेर और वन मृदाओं के विभिन्न संयोजनों के प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु पौधशाला प्रयोग किए गए, जिसने उद्घाटित किया कि 1:5 अथवा 1:2 (वी/वी) के अनुपात में चूना खान ढेर: वन मृदा के संयोजन इन सभी पांच वृक्ष प्रजातियों के लिए उत्तरजीविता, वृद्धि और जैव मात्रा पैरामीटरों के संबंध में सबसे प्रभावी संयोजन पाया गया। जहां तक पौधशाला अवस्था में प्रजाति प्रदर्शन का संबंध था, यूकेलिप्टस हाइब्रिड ने ऊँचाई, कॉलर व्यास, प्ररोह, जड़ शुष्क भार और कुल जैव मात्रा के लिए अधिकतम मान दर्शाया जबकि ग्रीविया में अधिकतम उत्तरजीविता अभिलिखित की थी।

जे एस टी चूनापत्थर खान, बल्दलवा (पांवटा साहिब) में 2003 के दौरान स्थापित रॉबिनिया स्यूडेकेसिया, ल्यूकेना ल्यूकोसीफेला, बॉहिनिया बेरिगाटा और ग्रीविया आप्टिवा जैसी प्रजातियों के 600 ई टी पीज़ को गिलाकर क्षेत्र परीक्षण पोषित किया। 2004 के दौरान इसी स्थान में करीब 1500 पादपों का दूसरा परीक्षण स्थापित किया जहां रोपण के दौरान एलनस निटिडा, क्वेर्कश ल्यूकोट्राइकोफोरा, रॉबिनिया स्यूडेकेसिया, ल्यूकेना ल्यूकोसीफेला; बॉहिनिया वेरिगाटा और ग्रीविया आप्टिवा जैसी प्रजातियों का उपयोग किया गया।

वर्तमान अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया कि चूना पत्थर खनित क्षेत्रों के सुधार के लिए रॉबिनिया स्यूडेकेसिया, बॉहिनिया वेरिगाटा, ल्यूकेना ल्यूकोसीफेला, ग्रीविया आप्टिवा, एलनस निटिडा और क्वेर्कश ल्यूकोट्राइकोफोरा के रोपणों को सफलतापूर्वक किया जा सकता है।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 2 : हिमाचल प्रदेश की रेणुका और सिम्बलवाड़ा वन्य प्राणि अभ्यारण्यों की पादप विविधता पर अध्ययन (एच एफ आर आई-24/02(ई बी सी-10)/प्लान/2003-2006)

उपलब्धियां : रेणुका वन्यप्राणि अभ्यारण्य में आने वाली रेणुका झील के चारों ओर पादपी मूल्यांकन ने दर्शाया कि विशेषकर इस क्षेत्र में 15 वृक्ष एवं झाड़ी प्रजाति के पुनर्जनन सहित कुल 109 शाकीय पादप प्रजातियां, 43 वृक्ष प्रजातियां और 24 झाड़ी प्रजातियां अभिलिखित की गईं। कुल प्रजातियों में से, क्षेत्र से औषधीय महता की 73 प्रजातियां भी अभिलिखित की गईं और इसमें से सात संकटस्थ पादपों की श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं।

रेणुका वन्यप्राणि अभ्यारण्य में 600-900 मी. समुद्र तल से ऊपर की उन्नतांशीय ढाल से दर्ज किए अनुसार आँकड़ों के विश्लेषण से यह प्रेक्षित किया गया कि वन वृक्षों की 61 प्रजातियों, झाड़ियों की 64 प्रजातियों और शाकों की 157 प्रजातियों का बना है। 500-750 मी. और 750-900 मी. ऊँचाई की रेंज पर पहचान किए गए पादप समुदायों में क्रमशः बॉहिनिया वेरिगाटा, मेलोटस फिलिपेन्सिस और टर्मिनेलिया अलाटा - बॉहिनिया वेरिगाटा थे। महत्वमान तालिका के आधार पर बॉहिनिया वेरिगाटा और टर्मिनेलिया अलाटा क्रमशः 600-750 मी. और 750-900 मी. ऊँचाई पर प्रधान वृक्ष प्रजाति थी। पादप प्रजातियों का वितरण पैटर्न दोनों ऊँचाइयों में बेतरतीब और निकटस्थ था। 600-750 मी. ऊँचाई रेंज की अपेक्षा 750-900 मी. ऊँचाई में पादप प्रजातियों के लिए प्रधानता की सान्द्रता थोड़ा निम्न थी और विविधता की तालिका थोड़ा उच्च थी। वृक्ष प्रजाति की आबादी संरचना में मुख्यतः दो पैटर्नो द्वारा प्रतिनिधित्व पाया गया। पहले पैटर्न में बार-बार पुनरुत्पादन दर्शाते हुए पौध अवस्था में एकलों के अत्यधिक अनुपात द्वारा प्रतिनिधित्व था जबकि दूसरे पैटर्न ने पौधों की अनुपस्थिति के साथ मध्यवर्ती घेरा श्रेणियों में ज्यादा एकलों को दर्शाया। अतः यह मूल्यांकित किया जा सकता है कि यदि दीर्घावधि के लिए इस प्रकार का रुझान अनवरत चलता है तो ये प्रजातियां निकट भविष्य में क्षेत्र से विलुप्त हो सकती हैं।



बीकोपा मोनीरी

400-650 औसत समुद्र तल से ऊपर उन्नतांशीम ढाल वाले सिम्बलवाड़ा वन्यप्राणि अभ्यारण्य क्षेत्र में पादपी मूल्यांकन भी किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण पर यह प्रेक्षित किया गया कि अभ्यारण्य क्षेत्र में वन वृक्षों की 53 प्रजातियों, झाड़ियों की 32 प्रजातियों, और शाकों की 175 प्रजातियों का बना है।

400-525 मी और 525-650 मी ऊँचाई रेंज पर पहचान किए गए पादप समुदाय क्रमशः शोरिया रॉबुस्टा-मैलोटेस फिलिपेन्सिस और शोरिया रॉबुस्टा-टर्मिनेलिया अल्बा थे। महत्वमान तालिका के आधार पर दोनों ऊँचाई रेंजों पर शोरिया रॉबुस्टा प्रधान वृक्ष प्रजाति थी। पादप प्रजातियों का वितरण पैटर्न दोनों ऊँचाइयों में बेतरतीब और निकटस्थ था।

परियोजना 3 : पाइनस रॉक्सबर्घाई, डैल्बर्जिया सिस्सू और सीड्रस देवदारा की महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के नाशिकीट एवं रोग प्रतिरोधी समलक्षणी/जीनप्ररूपों की जांच और चयन (एच एफ आर आई-013/06 (एफ पी टी-02) प्लान/2000-2006)

उपलब्धियां : नाशिकीट एवं रोग प्रभाव क्षेत्र के लिए चयनित वृक्ष प्रजातियों के उद्गमस्थलों एवं क्लोनो का मूल्यांकन किया गया। देवदार निष्पत्रक आक्रमण के लिए क्षेत्र अनुसंधान स्टेशन, शीली, सोलन में उगाए गए 19 विभिन्न बीज स्रोतों से देवदार के पौधों की नियमित और सुव्यवस्थित रूप से जांच की गई, जिसने दर्शाया कि सरीन, सोलन, काल्पा और हिमगिरी से एकत्रित बीजों ने अन्य की तुलना में इक्ट्रोपिस देवदारा के विरुद्ध ज्यादा प्रतिरोध दिखाया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

गोंडपुर, पांवटा घाटी में 35 क्लोनों वाले शीशम के क्लोनीय बीज उद्यान की ओडोन्टोटर्मिस पर्विडेन्स के विरुद्ध जांच की गई। प्लीकोप्टीरा रीफ्लेक्सा के विरुद्ध डैल्बर्जिया सिस्सू के 29 क्लोनों और 25 उद्गमस्थलों की भी जांच की गई और यह देखा गया कि क्षेत्र अवस्थाओं में 97 से 100 प्रतिशत तक उत्पीड़न स्तर के साथ कोड संख्या 90, 203, 36, 260, 107, 66, 59 और 42 वाले क्लोन संवेदी थे और 21.91 से 25.98 प्रतिशत तक उत्पीड़न वाले 28, 101 और 103 न्यूनतम संवेदनशील क्लोन थे। विभिन्न उद्गमस्थलों में कोड संख्या 53, 35, 61 और 2 वाले उद्गमस्थल संवेदनशील पाए गए, जो 89.13 से 93.75 प्रतिशत तक उत्पीड़न स्तर दर्शाते हैं और कोड नं. 46 और 94 वाले उद्गमस्थल ने 21.02 से 24.11 प्रतिशत उत्पीड़न दर्शाया।



कीट तथा छेदक आक्रमण के कारण चीड़ का शुष्कन

7 उद्गमस्थलों के लिए एकत्रित आँकड़ों को उनके नाशीजीव प्रतिरोध के लिए विश्लेषित किया। कीट तना छेदकों द्वारा उत्पीड़न स्तर 7.7 से 58.8 प्रतिशत था। एकत्रित आँकड़ों ने यह भी दर्शाया कि पी-38, ए एम प्लेटू सी 3 बी, पी-38 ए एम प्लेटू सी-1डी, पी-38 ए एम प्लेटू सी-1सी, चल्साई वन सी-4सी के वनों को मिलाकर हमीरपुर वन प्रभाग के तहत सीर कुनार खुद उद्गमस्थल विभिन्न कीट छेदक कॉम्प्लेक्सों (स्फेइनोप्टीरा एटीरिया, क्रीप्टोरहीकस रूफीसेन्स, प्लेटीपस बाइफॉर्मिस और पॉलीग्रेफस लोगिफोलिया) के प्रभाव के लिए साधारण रूप से प्रतिरोधी थे। आर एफ सकोर - सी-1, आर एफ सकोर - सी-प्प, आर-136 ई. बेनीथि सी-4 के वन को मिलाकर सोलन एवं राजगढ़ वन प्रभाग के तहत गिरि-गम्भार उद्गमस्थल इन कीट छेदक कॉम्प्लेक्सों के आक्रमण के प्रति संवेदी थे।

परियोजना 4 : सीड्स देवदारा के विशेष संदर्भ में एकीकृत नाशीजीव प्रबंध के लिए मॉडल का विकास (एच एफ आर आई-017/06(एफ पी टी-03) प्लान/2000-2006)

उपलब्धियां : देवदार वनों में इक्ट्रोपिस देवदारा की जैव-पारिस्थितिकी का अध्ययन किया गया और यह प्रेक्षित किया कि नाशीजीव एक साल में केवल एक वंश को पूरा करने में सक्षम था। मादाएं बसन्त के दौरान देवदार की कोमल सूचियों पर अण्ड निक्षेप करते हुए पाई गयीं और कुल उष्मायन अवधि 8.5 से 15.0 दिन रहीं। अप्रैल-मई के दौरान इक्ट्रोपिस देवदारा के हल्के हरे रंग के लार्वा अण्डों से निकलते हुए पाए गए। लार्वा ग्रसित वृक्षों की छोटी टहनियों और ग्रसित प्ररोहों के समान दिखाई पड़ा।

गत वर्ष के सर्दियों के प्यूपा से मध्य फरवरी में वयस्क निकलने शुरू हुए। क्षेत्र अवस्थाओं के तहत, शलभ का अधिकतम निर्गमन तब हुआ जब अप्रैल में लगभग 15 अण्डे निक्षेपित किए गए हैं। वसन्त शुरू होने के साथ, वयस्क नए वंशों को निकालना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार इस एकप्रज प्रजाति के जीवन चक्र में प्यूपल अवस्था सबसे लम्बी अवधि की है।

इस निष्पत्रक के सभी इन्स्टार अवस्थाएं लार्वा द्वारा स्वयं में स्रावित रेशमी धागों के द्वारा शाखाओं तथा अन्य वृक्षों में चली जाती हैं। महामारी के दौरान, ग्रसित वृक्षों पर तना, शाखाओं और अधोवृद्धि पर रेशमी धागों का एक नेटवर्क बन जाता है।

11 परजीव्याभों, 8 परभक्षियों और 9 कीटरोगजनकों को मिलाकर इस नाशीजीव के बड़ी संख्या में प्राकृतिक शत्रुओं की पहचान की गई। परजीव्यायों की तीन प्रजातियां, यथा - एपेन्टेलीस फलेविपीस, एपेन्टेलीस ग्लोमीरेटस, और एपेन्टेलीस रूफिक्रस,



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

इक्ट्रोपिस देवदारा के लार्वा से निकलीं। इन प्रजातियों द्वारा परजीवीकरण की सीमा क्रमशः अप्रैल, मई और जून में 6.7, 12.2 और 16.0 प्रतिशत थी। परभक्षियों में, केलोसोमा बीसोनी सबसे महत्वपूर्ण थी और इसका केवल एक भृंग रोजाना इक्ट्रोपिस देवदारा के 5.6-16.6 लार्वा खाने की क्षमता रखता है। कीटरोगजनक में, एन पी वी, बेसिलस सीरीयस, और ब्यूवेरिया बेसियाना महत्वपूर्ण है, जो क्रमशः 12.6, 16.5 और 12.9 प्रतिशत की सीमा तक संक्रमण उत्पन्न करते हैं। प्यूपा के मामले में ब्यूवेरिया बेसियाना का 22.4-36.5 प्रतिशत संक्रमण देखा गया।



कैम्पोप्लीजिडा देवदारा - ई. देवदारा का कोशित परजीव्याभ

वर्ष 2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायवीय क्षेत्रों में कृषि वानिकी के लिए पावलोनिया प्रजातियों की पहचान और प्रदर्शन (एच एफ आर आई-026/08 (ए जी एफ-02)प्लान/2003-2008)

स्थिति : हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायवीय क्षेत्रों में पूर्व में स्थापित पावलोनिया प्रजाति के क्षेत्र परीक्षण पोषित किए।

वर्ष के दौरान, नए क्षेत्र परीक्षणों को तैयार करने के लिए मुख्यतः जड़ कलमों द्वारा पौधे उगाए गए। इस प्रक्रिया में जम्मू व कश्मीर के जम्मू क्षेत्र में वन भूमि में एक परीक्षण स्थापित किया गया और रख पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में चाय बागान में निजी भूमि पर एक विशुद्ध कृषि वानिकी परीक्षण तैयार किया गया। इसके अलावा, बीटिंग संक्रियाएं भी की गईं। सभी क्षेत्र तथा पौधशाला परीक्षणों में विभिन्न वृद्धि पैरामीटरों पर आँकड़े भी अभिलिखित किए।



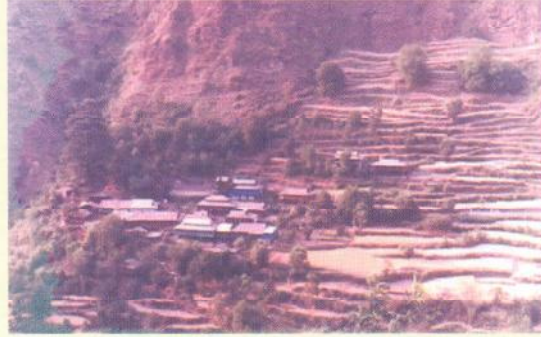
धर्मशाला में पावलोनिया प्रजाति का क्षेत्र परीक्षण

परियोजना 2 : हिमाचल प्रदेश के मध्यम एवं उच्च पहाड़ों में विद्यमान कृषि वानिकी प्रणालियों का नैदानिक सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन (एच एफ आर आई-028/008(ए जी एफ 03)प्लान/2003-2008)

स्थिति : विस्तृत सर्वेक्षण के लिए गाँवों की पहचान की गई और इसके बाद चयनित क्षेत्रों और गाँवों का स्तरविन्यास किया गया। प्रश्नावली के साथ पायलट सर्वेक्षण किया और गाँव स्तर की बैठकों का आयोजन भी किया गया। पहचान किए गए क्षेत्रों में विभिन्न विद्यमान कृषि वानिकी प्रणालियों के लिए एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006



कूल्हू घाटी में मध्यम पहाड़ी क्षेत्र का एक सामान्य भूदृश्य

परियोजना 3 : शीत रेगिस्तानों की इलेगनस अंगुस्टिफोलिया और रोजा वीबियाना के अलावा पांच प्रभावी देशज प्रजातियों (कैपेरिस स्पिनोसा, कॉलूटीया प्रजातियां, केरागाना प्रजाति, रिबीस प्रजाति, क्रेटेजस प्रजाति) की पौधशाला तकनीकों का मानकीकरण (एच एफ आर आई-019/03(ई बी सी-08)प्लान/2002-2007)

स्थिति : निम्न को समझने के लिए परीक्षण किए गए (i) रिबीस प्रजाति, कॉलूटीया प्रजाति, इलेगनस प्रजाति और हिप्पोफी रेम्नॉइडस की प्ररोह कलमों में और रोजा वीबियाना एवं कैपेरिस स्पिनोसा के जड़ अर्न्तभूस्तरी में मूलोत्पत्ति पर इन्डोल-3 ब्यूटीरिक एसिड की विभिन्न सान्द्रता का प्रभाव (ii) रिबीस प्रजाति, कॉलूटीया प्रजाति, हिप्पोफी रेम्नॉइडस, कैपेरिस स्पिनोसा और रोजा वीबियाना के बीजों में अंकुरण व्यवहार पर बुआई पूर्व उपचार (गरम पानी और जिबरेलिक एसिड) के प्रभाव, और (iii) रिबीस प्रजाति, कॉलूटीया प्रजाति, हिप्पोफी रेम्नॉइडस, कैपेरिस स्पिनोसा और रोजा वीबियाना के बीजों में अंकुरण व्यवहार पर मीडियम (बालू और मृदा के विभिन्न अनुपात) के प्रभाव की पॉली हाउस और पौधशाला अवस्थाओं दोनों में पुनरावृत्ति की गई। इसके अलावा, रिबीस प्रजाति, हिप्पोफी रेम्नॉइडस, रोजा वीबियाना, और कैपेरिस स्पिनोसा पर मल्टिंग उपचार के प्रभाव पर भी प्रयोग किए गए।



रोजा वीबियाना



कॉलूटीया नीपेलेन्सिस

हिमाचल प्रदेश की स्थिति घाटी में पड़ने वाली मानी. लाडांग. कुरिथ. हर्लिंग. टाबो ओर समदोह में पहले से चयनित स्थलों में पहचान की गई प्रजातियों के लिए विस्तृत पारिस्थितिकीय अध्ययन किए गए। विभिन्न प्रयोगों में विभिन्न वृद्धि पैरामीटरों से संबंधित आँकड़ों को अभिलिखित किया। लाहौल घाटी के त्रिलोकीनाथ क्षेत्र में क्रेटेजस सौंगेरिका के मामले में पारिस्थितिकीय अध्ययनों को करने के लिए स्थलों का चयन भी किया गया। सभी पारिस्थितिकीय पैरामीटरों प्रजाति के संबंधित पैरामीटरों का अध्ययन किया और आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है। इस अवधि के दौरान पूर्व में उगाए अनुसार क्षेत्र परीक्षणों को भी पोषित किया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

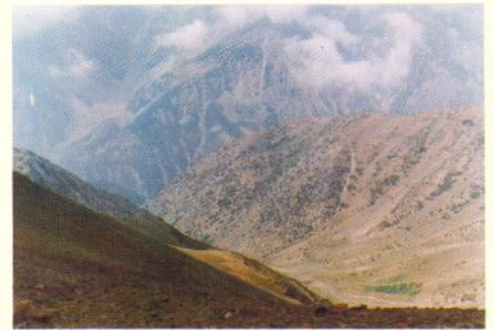
पॉली टनल, शेड हाउस, खाइयां खोदकर और सिंचाई प्रणाली की स्थापना करके क्षेत्र अनुसंधान स्टेशन टाबो (लाहौल और स्पिति) में सुविधाओं को और अधिक सशक्त बनाया गया। पौधशाला अवस्थाओं में परीक्षण करने के लिए विभिन्न प्रजातियों के पारिस्थितिकीय ब्योरों को स्कैन किया और नयी पौधशाला प्रयोगों को पोषित किया।



विभिन्न शीत रेगिस्तान प्रजातियों का क्षेत्र परीक्षण

परियोजना 4 : जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश के शीत रेगिस्तानों में पादप विविधता पर अध्ययन (एच एफ आर आई-029/02(ई बी सी-11)प्लान/2004-2007)

स्थिति : तिब्बत में पारछू झील के पुश्तंग (ब्रीचिंग) के कारण सतलज नदी में बाढ़ के कारण वर्ष के दौरान क्षेत्र अध्ययन नहीं किया जा सका, तथापि, पूर्व सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। क्षेत्र में प्रमुख वृक्ष प्रजातियां – सीड्स देवदारा, पाइनस जीरार्डियाना, जूगलेन्स रीगिया, बीटूला यूटिलिस, और सेलिक्स एल्बा महत्व की झाड़ियां थी – कैपेरिस स्पिनोसा, कॉलूटीया नीपेलेन्सिस, रिबीस प्रजाति, रूबूस प्रजाति लोनिसीरा प्रजाति। जड़ी-बूटियों को भी अभिलिखित किया और उनमें कुछ हैं थेलिक्ट्रम फोलिओलोसम, हीकैवलीयम केन्डिकेन्स, इपिलोबियम प्रजाति, पर्सिकेरिया प्रजाति और पोटीन्टिला प्रजाति। हीसोपस ऑफिसिनेलिस, बर्जीनिया स्ट्रेकी, विओला बाइफ्लोरा और जीरेनियम वालिचियाना औषधीय महत्व की प्रजातियां थी। सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित ओरेबिकी प्रजाति (परजीवी पादप) हिमाचल प्रदेश की वनस्पति के लिए नए अभिलेख में एक हो सकती हैं। क्रमशः 3000-3500 मी., 3500-4000 मी., 4000 से 4500 मी. और 4500-5000 मी उन्नतांशोय रेंज में विश्लेषित जड़ी बूटों की संख्या 81, 82, 38 और 25 थी।



शीत रेगिस्तान का एक दृश्य (पूह-उप-प्रभाग)

परियोजना 5 : हिमाचल प्रदेश की पांच क्वेर्कस प्रजातियों के मुख्य एवं सक्षम नाशीजीवों के प्राकृतिक शत्रु कॉम्प्लेक्स (एच एफ आर आई-027/06 (एफ पी टी-05) प्लान 2003-2008)

स्थिति : बाण ओक पर प्रमुख जोर देने के साथ ओक की सभी पांच प्रजातियों यथा – क्वेर्कस ग्लूका, क्वेर्कस ल्यूकोट्राइकोफोरा, क्वेर्कस डिलायाटा, क्वेर्कस सेमिकार्पिफोलिया और क्वेर्कस आइलेक्स की जांच की गई। इस अवधि के दौरान दरार वन, झूंगी (सुन्दरनगर जिला मंडी के नजदीक), नारग और राजगढ़ (नाहन जिला सिरमौर के नजदीक) क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया और ओक निष्पत्रक के प्रभाव को भी अभिलिखित किया। लीमेन्ट्रिया आबफूस्काट – भारतीय जीप्सी शलभ, प्रमुख निष्पत्रक पाया गया और हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में बाण ओक का भारी निष्पत्रण करने वाले शलभ का प्रकोप देखा गया। पत्ती क्षेत्रफल मापों का उपयोग करके पत्ती खपत के संदर्भ में भारतीय जीप्सी शलभ द्वारा क्षति का मूल्यांकन किया गया। बाण ओक पर भरण करने वाले लीमेन्ट्रिया ऑबफूस्काटा का जीवन-चक्र पूरा किया और प्रयोगशाला में दुबारा अध्ययन प्रगति पर है।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

अब तक साइनिपिड नाशीजीवों, जो पर्ण गाल उत्पन्न करते हैं, के परजीव्यभों के रूप में तीन हीमोप्टरान परजीव्याभो को खोजा गया। ये प्रजातियां टॉरीमस हिमेकेलिकस, टी. स्टॉम और टी. एब्सोनस हैं और कीट विज्ञान के लिए नयी हैं। वाइरस संक्रमित लार्वा क्षेत्र से एकत्र किया और भारतीय जीप्सी शलभ के प्रयोगशाला में पाले गए लार्वा से भी प्राप्त किए गए। लार्वा को संमागीकृत और अपकेन्द्रीत्र करके 1: एस डी एस का उपयोग करके वाइरस पार्टिकल को शोधित किया और रेफ्रिजरेट किया। केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के सहयोग से संचारण इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप के तहत पहचान की गई। न्यूक्लीयर पॉलीहीड्रोसिस वाइरस की आगे खोज प्रगति पर है।



लीमेन्ट्रिया ऑबफूसकाटा का 5वां इन्स्टार लार्वा



लीमेन्ट्रिया ऑबफूसकाटा का एन पी वी संक्रमित लार्वा

परियोजना 6 : चयनित औषधीय पादप प्रजातियों के बहुमात्र प्रवर्धन के लिए पौधशाला प्रौद्योगिकी का मानकीकरण (एच एफ आर आई-009/07(एन डब्ल्यू एफ पी-01)/प्लान/2000-2007)

स्थिति : बृन्धर पौधशाला (मनाली) में शीतोष्ण हिमालयों में उगी 33 औषधीय पादप प्रजातियों, शीली पौधशाला, सोलन में 30 प्रजातियों और शिलारू पौधशाला (शिमला) एवं मॉडल पौधशाला (शिमला) में प्रत्येक में 10-10 प्रजातियों के जननदृव्य पोषित किए। आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पादप प्रजातियों यथा - पिकोराइजा कुर्रिया (कारू), एकोनिटम हीटोरोफाइलम (पटिश), वेलीरियाना जटामांसी (मुश्कबाला) और एन्जीलिका ग्लूका (चोरा), की कृषि-तकनीकों सुधारने के लिए परीक्षण प्रगति पर हैं। इन प्रजातियों में कायिक प्रवर्धन प्राप्त करने के लिए कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 7 : शंकुवृक्षों और उनके पृथुपर्णी सहचारियों के पात्रीकृत पौधों को उगाने की पौधशाला तकनीकों का मानकीकरण (एच एफ आर आई-016/05(एस एफ जी-06) प्लान/2000-2007)

स्थिति : मॉडल पौधशाला, बारेगांव, शिमला और अनुसंधान पौधशाला, शिलारू में जड़ ट्रेनरों में विभिन्न परीक्षणों के तहत उगाए गए देवदार, फर और स्पूस तथा कुछ पृथुपर्णी प्रजातियों के पौधशाला स्टॉक को पोषित किया। रीझरा देवदारा, एबिज पिन्ड्रो, पिसीया स्मिथियाना और एलनस नितिडा में जड़ ट्रेनर पौध उत्पादन के अनुकूलतम आकार/किस्म का पता लगाने के लिए परीक्षण किए। जड़ ट्रेनर पौध उत्पादन प्रणाली के तहत स्थानीय रूप से तैयार कम्पोस्ट को मिलाकर पात्र मीडिया पर परीक्षण शुरू किए गए। देवदार, सिल्वर फर ओर स्पूस में पारम्परिक प्रणाली की तुलना में जड़ ट्रेनरों में उगाए गए पौधशाला स्टॉक के बर्हिरोपण के उपरान्त उत्तरजीविता और वृद्धि का मूल्यांकन करने हेतु क्षेत्र परीक्षण शुरू किए गए।



रूट ट्रेनरों में पौधशाला स्टॉक
सिल्वर फर में जड़ विकास



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 8 : सीड्स देवदारा में रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम (एच एफ आर आई-028/05 (एस एफ जी-08) प्लान-03/2003-2008)

स्थिति : आकृतिमान विशेषकों के प्रत्यक्ष आकलनों के आधार पर देवदार के सर्वोत्तम स्टैण्डों के चयन हेतु देवदार वनों का सर्वेक्षण किया। बीज स्टैण्डों के प्रत्यक्ष चयन के बाद नमूना भूखण्ड अध्ययन जिसमें स्टैण्ड के भीतर प्रत्येक एकल वृक्ष को मात्रात्मक एवं गुणात्मक विशेषकों के लिए मूल्यांकित किया और अन्तिम रूप से अधिकतम औसत वाले स्टैण्डों का चयन किया गया। बीज स्टैण्डों के बीज उत्पादन क्षेत्रों में इनके रूपान्तरण के लिए, प्रत्यक्ष चयन को सम्पूरित करने के लिए नमूना भूखण्ड अध्ययन किए गए। रायपुर वन प्रभाग के ननखेरी वन (15 हैक्टेयर) और थीओग वन प्रभाग में आने वाले चीओग वन (20 हैक्टेयर) का पूर्ण गणन के लिए अन्तिम रूप से चयन किया गया। इन चयनित वनों में प्रत्येक एकल वृक्ष को धारण एवं छंटाई के लिए मूल्यांकित और चिह्नित किया। चीओग वन में 1527 वृक्षों को मूल्यांकित किया जिसमें से 1230 वृक्षों को रोक लिया गया और छंटाई के लिए 297 को चिह्नित किया गया जबकि ननखेरी वन में गणना किए गए वृक्षों की कुल संख्या 1137 थी, जिसमें से 1011 को रोक लिया गया और 126 को छंटाई के लिए चिह्नित किया गया। इन स्टैण्डों की विस्तृत चिह्नन सूची तैयार की जा रही है और छंटाई अनुमति प्राप्त करने के लिए संबंधित अधिकारियों को प्रस्तुत की जाएगी। जम्मू व कश्मीर राज्य में आने वाले उधमपुर वन प्रभाग के देवदार वनों का भी सर्वेक्षण किया गया। तथापि, 15 हैक्टेयर बीज स्टैण्डों के, बीज उत्पादन क्षेत्रों में इनके रूपान्तरण के लिए, चयन हेतु अभी और क्षेत्रों का चयन किया जाना है। हिमाचल प्रदेश और जम्मू तथा कश्मीर दोनों राज्यों में विभिन्न देवदार क्षेत्रों में कुल 70 धन वृक्षों का चयन किया गया और सन्तति परीक्षण तैयार करने के लिए इस साल बीज एकत्र किए जाएंगे।

परियोजना 9 : हिमाचल प्रदेश की निचली पहाड़ियों में आंवला और खैर प्रदर्शन रोपणों की स्थापना।

स्थिति : हिमाचल प्रदेश के टोनीदेवी शहर के नजदीक हमीरपुर-सरकाघाट राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थिति दो स्थलों यथा - अपर दरोगान और भरेटा में आंवला और खैर के करीब 2.5 हैक्टेयर प्रदर्शन रोपणों में मृत की जगह दूसरे पौधे लगाने का कार्य किया और उनका पोषण किया गया। आंवला और खैर रोपण के वास्तविक मॉडल के विकास के लिए इन रोपणों को व्यापक रूप से पोषित किया जा रहा है। इस विषय पर प्राप्त निष्कर्ष ने उद्घाटित किया कि आसपास क्षेत्रों के किसान भी अपनी अल्प प्रयुक्त घासभूमियों में इस प्रकार के हस्तक्षेपों के इच्छुक हैं।

वर्ष 2005-2006 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : हिमाचल प्रदेश और जम्मू व कश्मीर के चयनित शीतोष्ण औषधीय पादपों में माइकोराइजल संबंध (एच एफ आर आई-032/07 (एफ पी टी-06) प्लान/2005-2008)

स्थिति : बांशिरु धार (मनाली) और हातू (नारकंडा) क्षेत्रों से जड़ों और मूल परिवेषी मृदा के साथ एन्जीलिका ग्लूका (चोरा) एकोनितम हीटीरोफाइलम (अतीस), बेलीरियाना, जटामांसी (मुशकबाला), पिक्रोराइजा कुर्रोया (कारू), सौसोरिया कास्टस (कुथ) और हीरेक्लीयम केन्डिकेन्स (पटराला) के पादप एकत्र किए। सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित इन प्रजातियों के जड़ और मृदा नमूनों को प्रयोगशाला में प्रक्रमित किया और बाद में जड़ नमूनों को आगे अध्ययन के लिए एफ.ए.ए(5:5:9 के अनुपात में फार्मेलडीहाइड, एसीटिक एसिड और अल्कोहल) में फिक्स कर दिया गया। जड़ों में वी ए एम उपनिवेशन ने औषधीय महत्व की इन सभी प्रजातियों में वी ए एम प्रजातियों के संबंध को सुनिश्चित किया। आर्द्र चनाई और निस्तारण विधियों द्वारा मृदा से बीजाणुओं को निष्कर्षित किया। मूल परिवेषी मृदाओं का रासायनिक अध्ययन भी शुरू किया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 2 : हिमाचल प्रदेश और जम्मू तथा कश्मीर में महत्वपूर्ण औषधीय पादपों के नाशिकीटों का सर्वेक्षण, जैविकी एवं नियंत्रण (एच एफ आर आई-033 / 06(एफ पी टी-07) / प्लान / 2005-2010)

स्थिति : शिली (जिला सोलन), शिलारू (जिला शिमला), ब्रून्धार (जिला कूल्लू) और बारागांव (जिला शिमला) में स्थित संस्थान की अनुसंधान पौधशालाओं में विभिन्न नाशीजीवों के प्रभाव को अभिलिखित करने के लिए नियमित और व्यवस्थित सर्वेक्षण किए गए। इसके अलावा, आयुर्वेद विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा नेरी (जिला हमीरपुर) और जोगिन्दर नगर (जिला मण्डी) में पोषित पौधशालाओं / प्रायोगिक क्षेत्रों में भी उपर्युक्त प्रेक्षणों के अभिलेखन के लिए भ्रमण किया।

परियोजना 3 : देवदार (सीड्स देवदारा) की प्राकृतिक आबादियों में एलोजाइम विभिन्नता (एच एफ आर आई-030 / 05(एस एफ जी-10) प्लान / 03 / 2005-2008)

स्थिति : देवदार की आबादियों में आनुवंशिक विविधता का अध्ययन करने के लिए जम्मू व कश्मीर से 4 आबादियों और हिमाचल प्रदेश में 11 विभिन्न आबादियों (चीयोग, चोपाग, मनाली, चैल, डलहौजी, चूराह (आर एफ खानी), नालदहेरा, नानखेड़ी, कसोंग, छाजपुर और कालपा) से न्यूनतम 20 एकलों से खुले परागित बीज का उपयोग किया जा रहा है। तथापि, वर्ष के दौरान इन सभी आबादियों से बीज एकत्र नहीं किए जा सके क्योंकि इसे अपर्याप्त बीज वर्ष पाया गया। कासोंग, चोपाल और मनाली की तीन आबादियों से एकत्रित बीज को चार एन्जाइम प्रणालियों के लिए मूल्यांकित किया गया।

परियोजना 4 : हिमाचल प्रदेश में देशज एवं संस्थानिकीकृत सहभागी वन प्रबंध का नैदानिक अध्ययन (एच एफ आर आई-025 / 08(पी एफ एम-01)प्लान / 2005-2008)

स्थिति : लिंग विषय विश्लेषण के साथ हिमाचल प्रदेश में प्रयोग किए जा रहे संस्थानिकीकृत एवं देशज (पारम्परिक) सहभागी वन प्रबंध एप्रोचों का नैदानिक सर्वेक्षण करना परियोजना का उद्देश्य है। राज्य के कूल्लू, सिरमौर और शिमला जिलों के विभिन्न पी एफ एम क्षेत्रों में स्थल चयन हेतु और नैदानिक सर्वेक्षण करने के लिए भी सर्वेक्षण किए गए। क्षेत्र में प्रभागीय वन अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया गया विभिन्न वी एफ सी, वी एफ डी सी के संबंध में द्वितीयक आँकड़े भी एकत्र किए। पहचान किए गए मापदण्ड के अनुसार पी एम एम की प्रगति के व्योरो को प्रमाणित करने के लिए पाइलट सर्वेक्षण के दौरान गांव में बैठकों का आयोजन किया। पी एफ एम के बारे में स्थिति-सम्बन्धी परिवर्तन और जानकारी के विश्लेषण हेतु वन प्रशिक्षण केन्द्र, सुन्दरनगर और वन स्कूल चायल में फॉरेस्ट गार्डों का सर्वेक्षण किया। अन्य वन क्षेत्रों से आँकड़े एकत्र किए जा रहे हैं।

**वर्ष 2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं
(बाहर से सहायता प्राप्त)**

परियोजना 1 : हिमाचल प्रदेश के शीतोष्ण क्षेत्र में औद्योगिक रोपणों के साथ व्यापारिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की बीज की फसल के लिए उपयुक्त मॉडल का विकास (बी टी/पी आर 4372/पी बी डी / 17 / 285 / 2005-2006 : डी बी टी निधीयित परियोजना)

स्थिति : हिमाचल प्रदेश के कूल्लू और शिमला जिले के विभिन्न स्थलों में औषधीय पादपों के विभिन्न बीज की फसल के परीक्षणों में आँकड़ा अभिलेखन जारी था। फसल पूर्व सस्य विज्ञान वृद्धि लक्षणों के लिए आँकड़ों को सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित किया जा रहा है। कुछ परीक्षणों के लिए पैरामीटर अध्ययन भी किए गए। निराई, गुड़ाई और सिंचाई करके परीक्षणों को पोषित किया गया और मृत हुए पौधों की जगह दूसरे लगाने का भी कार्य किया गया। नियमित पौधशाला संक्रियाएं करके ब्रून्धर और शिलारू अनुसंधान



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006



पिक्रोराइजा कुर्रोया



वेलीरियाना जटामांसी

पौधशालाओं में बीच की फसल के परीक्षणों के लिए प्रयुक्त होने वाले चयनित प्रजातियों के गुणवत्ता रोपण स्टॉक को पोषित किया गया। औषधीय महत्व की इन प्रजातियों के सक्रिय सिद्धान्तों की तुलना करने के लिए प्राकृतिक आवासों से साथ ही साथ स्थानीय बाजार से एकोनिटम हीटीरोफाइलम, एन्जीलिका ग्लूका, पॉलीगोनेटम वर्टिसिलेटम, पिक्रोराइजा कुर्रोया और वेलीरियाना जटामांसी के नमूने एकत्र किए गए।

इन प्रजातियों के प्राप्तिस्थान के प्राकृतिक क्षेत्रों से मृदा नमूने भी एकत्र किए और प्रयोगशाला में विश्लेषित किया। वृद्धि पैरामीटरों सहित आँकड़ों के आवर्ती अभिलेखन जारी है।

परियोजना 2 : लाहौल और स्पिति, हिमाचल प्रदेश के खास शुष्क शीतोष्ण एवं एल्पाइन चारागाहों में पारिस्थितिकीय एवं प्रबंध अध्ययन (बी टी/पी आर 4102/एन बी डी बी/51/027/2003)

स्थिति : दुर्लभ और स्थानिक पादपों के मूल्यांकन और प्राप्तिस्थान सहित वनस्पति तत्वों के अभिलेखन हेतु प्रतिनिधि स्थलों के रूप में लाहौल घाटी में त्रिलोकनाथ, दालांग और क्वरिंग, मियार नाला एवं स्पिति घाटी में ग्यू, टाबों और कुंजम जिलों के प्रत्येक भाग में स्थल सहायता प्राप्त एल्पाइन चारागाहों की पहचान की गई।

उपलब्ध स्रोतों से सभी अध्ययन स्थलों के आधारभूत आँकड़े एकत्र किए।

वनस्पति तत्वों के मूल्यांकन सहित एल्पाइन चारागाहों के संरचनात्मक और कार्यात्मक पहलुओं पर विस्तृत अनुसंधान के लिए खोकसर (लाहौल घाटी) और कियाटो एवं गेट (स्पिति घाटी) में स्थलों का चयन किया गया।



(क) त्रिलोकनाथ (लाहौल) और (ख) कुंजम (स्पिति) में प्रारम्भिक सर्वेक्षण के लिए एल्पाइन चारागाह



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

क्वाड्रेटों का उपयोग करके मासिक अन्तरालों पर संबंधित स्थलों में जैवमात्रा आकलन और उत्पादकता क्षमता सहित संघटक प्रजातियों के पादपी संयोजन, ऋतुजैविकी, पादप-सामाजिकी पर अध्ययन किए गए। दोनों घाटियों में नए पादपी और उनके सहचारी अभिलिखित किए। विभिन्न ऊँचाइयों से कुल मिलाकर करीब 100 प्रजातियां अभिलिखित की गईं और इनमें अधिकांश को क्षेत्र में पूर्व में किए गए खंडित अध्ययनों के साथ मिलाया गया। इन चारागाहों से औषधीय महत्व और क्षेत्र के लिए स्थानिक अनेकों प्रजातियों को भी अभिलिखित किया। कुछ स्थलों में वनस्पति किस्म की भी पहचान की गई। उत्पादकता पर आँकड़े तथा अन्य पैरामीटर विश्लेषित किए जा रहे हैं।

परियोजना 3 : हिमाचल प्रदेश बिलासपुर जिले में कोल डाम जल विद्युत परियोजना के तहत आने वाले वन क्षेत्रों का पारिस्थितिकीय मूल्यांकन (एफ टी 48-88/86(एफ सी ए)2004-2007) कोल डाम : एच पी एस एफ डी निधीयित परियोजना)

स्थिति : बिलासपुर, कुनिहार, थीओग और कार्साग वन प्रभागों के विभिन्न जलग्रहण क्षेत्रों में अध्ययन स्थलों का चयन किया और इसके बाद पहचान किए गए स्थानों में विस्तृत प्रारम्भिक सर्वेक्षण और पारिस्थितिकीय अध्ययन किए गए। पादप विविधता अध्ययन पूरा किया। मृदा के रासायनिक गुणों के मूल्यांकन के लिए मृदा नमूने भी एकत्र किए गए।



कोल्दम जलग्रहण (थीओग वन प्रभाग)



टैक्सस वालिचियाना

परियोजना 4 : पिक्रोराइजा कुर्रोंया रायली एक्स बेंथ और वेलीरियाना जटामांसी जोन्स के गुणवत्ता रोपण पदार्थ का उत्पादन और स्थानीय समुदायों में इनकी खेती प्रौद्योगिकी का विस्तार (जी ओ/एच पी-2/2004-2007 : एन एम पी बी निधीयित परियोजना)

स्थिति : परियोजना के तहत कार्यकलाप मुख्यतः ब्रून्धार (मनाली), शिली (सोलन) और शिलारू (शिमला) में स्थित संस्थान के तीन अनुसंधान स्टेशनों/पौधशालाओं में पिक्रोराइजा कुर्रोंया और वेलीरियाना जटामांसी के गुणवत्ता रोपण पदार्थ के उत्पादन और रखरखाव के चारों ओर केन्द्रीय था। वर्ष के दौरान कार्यकलापों में पौधशाला क्यारियों के लिए भूमि तैयार करना, पौधशाला में पिक्रोराइजा कुर्रोंया और वेलीरियाना जटामांसी के 1-2 साल के विद्यमान स्टॉक का बृहद प्रचुरोदभवन (गुणन) और वालू फार्म यार्ड खाद प्राप्त करना शामिल है। इस परियोजना के तहत वर्ष 2004-2007 के दौरान राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड द्वारा पिक्रोराइजा कुर्रोंया (कुटकी) और वेलीरियाना जटामांसी (मुशकबाला) के 4 लाख गुणवत्ता रोपण पदार्थ के उत्पादन का लक्ष्य दिया गया है। तदनुसार, संस्थान ने 3.20 से 3.30 लाख पादप उगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है, उदाहरणार्थ - परियोजना अवधि के पहले दो सालों के दौरान इन प्रजातियों का 80: लक्ष्य, ताकि परियोजना के अन्तिम वर्ष पदार्थ के वितरण और विस्तार कार्यकलापों पर ज्यादा जोर दिया जा सके। मार्च, 2006 तक, संस्थान ने विभिन्न पौधशालाओं में इस परियोजना के तहत कुटकी और मुशकबाला के 3.3 लाख गुणवत्ता रोपण पदार्थ उगाया है। वर्ष 2005 के दौरान स्थानीय समुदायों में इन दो प्रजातियों के 15,750 पादप वितरित किए गए।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 5 : सर्वोत्कृष्ट रोपण पदार्थ का विकास, मॉडल रोपणों की स्थापना और हिमाचल प्रदेश में स्थानीय समुदायों के लिए वन्य खूबानी की पौधशाला और रोपण तकनीकों का विस्तार (27-79/नोवोड/2004/1188-89/2004-2007 : नोवोड निधीयित परियोजना)

स्थिति : हिमाचल प्रदेश के किन्नौर और शिमला जिलों से वन्य खूबानी के बीज एकत्र किए। तब बीजों में निम्न तापमान पर नम बालू में बीज-पूर्व स्तरण उपचार किया गया और बाद में पौधशाला क्यारियों में बोया गया। अनुसंधान पौधशालाओं में वन्य खूबानी के लगभग 10,000 गुणवत्ता पौधे उगाए गए।

25 हैक्टेयर क्षेत्रफल में प्रजाति का रोपण करने के लिए उपयुक्त स्थलों के चयन हेतु सर्वेक्षण किया गया। मृदा गहराई और नमी अधिशासन के आधार पर भाबा नगर (किन्नौर), शिलारू (शिमला), बारोज (सोलन) में और सम्बल (मंडी) जिले में रोपणों के लिए स्थलों का चयन किया। जनवरी-फरवरी, 2006 के दौरान रोपण कार्यकलाप किए गए। भाबा नगर (किन्नौर वन प्रभाग) में वन्य खूबानी (6.75 हैक्टेयर) के 2700 पौधों, शिलारू (कोटगढ़ वन प्रभाग) में 2500 पौधों, (6.25 हैक्टेयर), बारोज (सोलन वन प्रभाग) में 2500 पौधों (6.25 हैक्टेयर), और बहलीधार, सम्बल (नाचन वन प्रभाग) में 2300 पादपों (5.75 हैक्टेयर) का रोपण किया गया। परियोजना के तहत तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गए।

परियोजना 6 : हिमाचल प्रदेश के निचले और मध्य हिमालयन क्षेत्रों में जैट्रोफा करकस एल. बीज स्रोतों की उपयुक्तता (बी टी/पी आर/5094/ए जी आर/16/429/2005-2008 : डी बी टी निधीयित परियोजना)

स्थिति : मार्च-अगस्त, 2005 के दौरान पौधशाला में 25 विभिन्न बीज स्रोतों से जैट्रोफा करकस के लगभग 26,000 गुणवत्ता रोपण स्टॉक उगाए और पोषित किए। जुलाई-अगस्त, 2005 के दौरान हिमाचल प्रदेश के सोलन, बिलासपुर और सिरमौर जिलों में स्थिति 6 विभिन्न स्थलों में 10 हैक्टेयर क्षेत्रफल में प्रायोगिक एवं प्रदर्शन रोपणों की स्थापना हेतु इस प्रकार उगाए गए स्टॉक का उपयोग किया गया।

हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों को कवर करके अक्टूबर-नवम्बर, 2005 के दौरान 26 विभिन्न स्थानों से जैट्रोफा करकस के करीब 80 किलो बीज भी एकत्र किए गए। इस संग्रहण में से, बुआई उद्देश्यों के लिए 15 किलो बीज व.अ.सं., देहरादून भेजे और 10 किलो बीज सोलन और नालागढ़, वन प्रभागों के प्रभागीय वन अधिकारियों को दिए गए।

मार्च और अप्रैल, 2006 में बीजों को बोने के लिए बीर प्लासी पौधशाला, नालागढ़ और मझोली पौधशाला, सोलन का उपयोग किया गया। इसके अलावा, 10 हैक्टेयर क्षेत्रफल में बीटिंग अप संक्रिया और नए रोपणों को लगाने हेतु जैट्रोफा के 30,000 रोपण स्टॉक के कुल उत्पादन के लिए करीब 10,000 कलमों का भी रोपण किया गया।

**वर्ष 2005-2006 के दौरान शुरू की गई परियोजनाएं
(बाहर से सहायता प्राप्त)**

परियोजना 1 : हिमाचल प्रदेश के लाहौल घाटी में विलो (सेलिक्स प्रजाति) मर्त्यता रोकने के लिए पारिस्थितिकीय रूप से व्यवहार्य और सामाजिक-आर्थिक रूप से स्वीकार्य एकीकृत मॉडल का विकास (जी बी पी आई/आई ई आर पी/04-05/34/861)

स्थिति : विलों के क्लोनों को उगाने के लिए पौधशाला सिस्सू (लाहौल घाटी) में स्थापित की गई, जहां दोनों राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्लोनों, उद्गमस्थलों और प्रजातियों को उनकी आगे जांच के लिए रोपित किया गया। इसके अलावा, 8 अन्तर्राष्ट्रीय क्लोनों, जम्मू व



कश्मीर राज्य से लाई गई 3 प्रजातियों और हिमाचल प्रदेश के कार्सोग क्षेत्र में और इसके चारों ओर पहचान किए गए सेलिकस के 5 विभिन्न उद्गमस्थलों को इस पौधशाला में लगाकर पोषित किया। इसके अलावा, स्पिति और किन्नौर घाटियों से 14 विभिन्न स्थानों/उद्गमस्थलों से एकत्रित पदार्थ को भी टाबों में पौधशाला में लगाकर पोषित किया गया। 0.5 हैक्टेयर क्षेत्र में एक प्रदर्शन रोपण स्थापित किया, जहां सेलिकस के 246 पादप और पॉप्युलस सिलिएटा के 84 पादपों को लगाया गया।

सिस्सू में इस प्रदर्शन रोपणों की स्थापना करते समय जम्मू व कश्मीर राज्य से सेलिकस की 5 विभिन्न प्रजातियों, हिमाचल प्रदेश से 3 विभिन्न उद्गमस्थलों और 5 विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय क्लोनों के रोपण पदार्थ का उपयोग किया गया।



लाहौल घाटी में विलो रोपण

विलो पर एफिड आक्रमण के मूल्यांकन और इनके जीवन चक्र पर अध्ययन के लिए सिस्सू में तैयार पौधशाला, टेडि और सर्तिगरी में रोपणों सहित गोम्पथांग में और केलांग में ग्रामीणों द्वारा उगाए गए विलो के रोपणों का भ्रमण किया गया। विलो एफिडों की आबादियों के अभिलेखन हेतु 9 टहनियों को चिह्नित किया और पांच दिन तक रोजाना वांछित प्रेक्षण अभिलिखित किए।

एलेटॉयड विविपरेस नीम्फ दिखाई दिए, जब कालोनी अति भीड़भाड़ वाली बन गयी। एलेट एफिड दिखाई दिए और इन्हें चट्टान की दरारों के भीतर आश्रय लेते हुए देखा गया। लाहौल घाटी में सर्तिगरी से पहली बार जी डब्ल्यू ए एकत्रित किया गया।

परियोजना 2 : हिमाचल प्रदेश में वेर्वेरिस एरिस्टाटा डी सी के विभिन्न उद्गमस्थलों में आबादी स्तर और बेर्बेरिन मात्रा पर अध्ययन और इसकी प्रवर्धन तकनीकों का मानकीकरण (बी टी/पी आर 4695/पी बी डी/17/300/2005-2008 : डी बी टी निधीयित परियोजना)

स्थिति : परियोजना का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश में उच्च बेर्बेरिन उत्पादक बी. एरिस्टाटा के पहचान किए गए सर्वोत्कृष्ट क्लोनों/उद्गमस्थलों के बहुमात्र प्रवर्धन के लिए पौधशाला तकनीकों विकसित करना है। परियोजना अवधि की प्रारम्भिक अवधि के दौरान हिमाचल प्रदेश में बेर्बेरिस एरिस्टाटा के छः उद्गमस्थलों की पहचान की गई। आगे अध्ययनों के लिए प्रत्येक उद्गमस्थल से 2 से 3 परिपक्व पादपों के अनियमित चयन के बाद 2 किलो जड़ नमूने एकत्र किए। एकत्रित जड़ों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा गया, छाया में सूखाकर बेर्बेरिस मात्रा के आकलन हेतु वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून भेजा गया। प्रजाति के बहुमात्र प्रवर्धन के लिए पौधशाला तकनीकों के मानकीकरण हेतु परिपक्व पादपों से एकत्रित एक साल की अर्ध-कठोरकाष्ठ कलमों को आई बी ए, आई ए ए और एन ए ए की विभिन्न सान्द्रताओं के साथ उपचारित किया और संस्थान के धूमिका कक्ष में प्रतिरोपित किया गया। संस्थान के पौधशाला और धूमिका कक्ष से तना कलमों के अंकुरण पर आँकड़े एकत्र किए जा रहे हैं। बीज अंकुरण अध्ययनों के लिए पके फलों से निष्कर्षित बीजों में 13 विभिन्न बुआई पूर्व उपचार किए गए और अध्ययन ने दर्शाया कि 24 घण्टे गरम पानी में बीजों में अधिकतम अंकुरण अभिलिखित किया गया। इसके बाद 24 घण्टे उबले पानी का उपचार रहा।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 3 : हिमाचल प्रदेश में कूल्लू घाटी में पादप विविधता का सूचीकरण, प्रलेख-पोषण और विभिन्न पवित्र बागों के संरक्षण के लिए स्थल-विशेष प्रबंध रणनीतियां विकसित करना (जी बी पी आई/आई ई आर पी/04-05/18/865/2005-2008 : जी बी पी आई एच ई डी निधीयित परियोजना)

स्थिति : वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य पादप विविधता का प्रलेखन और सूचीकरण करना, समीपवर्ती वन क्षेत्र की तुलना में वृक्षों के पुनर्जनन स्तर का मूल्यांकन करना, स्थानीय लोगों में जागरूकता सृजित करना और स्थानीय लोगों के सहयोग के द्वारा पवित्र बागों का पुनर्नवीकरण एवं संरक्षण करने हेतु स्थल-विशेष रणनीतियां विकसित करना है।

पवित्र बागों पर आँकड़ा अभिलेखन के लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई और अध्ययन क्षेत्र में क्षेत्र भ्रमण किया गया और ग्रामीणों के साथ बैठकें भी की गईं। बाइस पवित्र बागों का भ्रमण किया और पादप विविधता पर सूचना अभिलिखित की गई। पवित्र बागों से अब तक 31 परिवारों से संबंधित 55 पादप प्रजातियां अभिलिखित की गईं। 15 प्रजातियों पर पारम्परिक मानव-वानस्पतिक सूचना भी प्रलेखित की गई।

परियोजना 4 : हिमाचल प्रदेश में 100 हैक्टेयर प्रदर्शन भूखण्ड स्थापित करना और डेन्ड्रोकैलामस हैमिल्टोनाई के सर्वोत्कृष्ट रोपण पदार्थ का उत्पादन (बी टी/पी आर/5243/ए जी आर/16/456/2005-2008/डी बी टी निधीयित परियोजना)

स्थिति : जहां डेन्ड्रोकैलामस हैमिल्टोनाई का प्रदर्शन भूखण्ड तैयार किया जा रहा है वह स्थल सोलन के 28 कि.मी. दक्षिणपूर्व में स्थित है। यह क्षेत्र सोलन वन प्रभाग के धादियारघाट बीट, लूगॉन, ब्लॉक, परवानू रेंज के तहत आता है।

कार्यकलाप सारणी और 10 हैक्टेयर प्रदर्शन भूखण्ड लगाने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, स्थलों को तैयार करने हेतु वांछित अन्य संबंधित कार्यकलापों के अलावा समीपवर्ती गांव दाधोग का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण पूरा किया गया। ऊतक संवर्धन से उगाए प्रायोगिक (2.63 हैक्टेयर), पारम्परिक रूप से उगाए (0.27 हैक्टेयर) और 2.10 हैक्टेयर प्रदर्शन भूखण्डों का उपयोग करके 5 हैक्टेयर क्षेत्रफल में रोपण उगाए गए। प्रायोगिक भूखण्डों को तैयार करने हेतु यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प अपनाया गया। उर्वरकों के चार उपचारों और तीन प्रतिकृतियों के साथ 5 मी ग 5 मी और 6मी ग 6मी के दो अन्तरालों पर दिशानिर्देशानुसार ऊतक संवर्धन से उगाए पादपों के लिए प्रायोगिक भूखण्ड तैयार किए गए। पारम्परिक रूप से उगाए पादपों और प्रदर्शन भूखण्ड के लिए 5मी ग 5मी का अन्तराल रखा गया।

सारांश: परियोजनाओं की संख्या

	2005-2006 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2005-2006 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2005-2006 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजना	04	09	04
बाह्य परियोजनाएं	—	06	04
कुल	04	15	08



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

शिक्षा एवं प्रशिक्षण

शिक्षा

1. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून से भारतीय वन सेवा के परिवीक्षार्थियों ने 17 मई, 2005 को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला का भ्रमण किया।
2. उत्तरांचल वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी के रेंज फॉरेस्ट ऑफीसर प्रशिक्षणार्थियों ने 19 मई 2005 को संस्थान का भ्रमण किया।
3. सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल, विकास नगर, शिमला के विद्यार्थियों ने 22 जून 2005 को संस्थान का भ्रमण किया।
4. वन प्रशिक्षण विद्यालय, चायल, हिमाचल प्रदेश के फॉरेस्ट गार्ड प्रशिक्षणार्थियों ने 22 जुलाई 2005 को संस्थान का भ्रमण किया। प्रशिक्षणार्थियों को एक प्रस्तुतिकरण द्वारा संस्थान के जारी संस्थागत अनुसंधान कार्यकलापों की जानकारी दी गई।
5. प्रभागीय वन कार्यालय, किन्नौर के अधिकारियों के साथ जिला किन्नौर के किसानों के एक दल को संस्थान द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यकलापों की जानकारी दी गई और पारिस्थितिकी से उपयुक्त कृषिवानिकी मॉडलों, जिन्हें जिलों में अपनाया जा सकता है, सहित सामान्य रूचि के विषयों पर 21 मार्च 2006 को विचार-विमर्श किया गया।
6. इस संस्थान के डॉ. वनीत जिश्तू को व.अ.सं. सम-विश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा वानिकी में पी एच डी डिग्री प्रदान की गई।

प्रशिक्षण

आयोजित

1. जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश के राजगढ़ वन प्रभाग में आने वाले नारग में 2 और 3 सितम्बर 2005 तक "वन्य खूबानी" पर दो दिवसीय किसान प्रशिक्षण आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण भारत सरकार के नोवोड बोर्ड द्वारा निधीयित परियोजना के तहत आयोजित किया गया। 17 मार्च 2005 के मॉडल पौधशाला, बड़ागांव में बड़ागांव के किसानों के लिए नोवोड निधीयत परियोजना के तहत एक खुली बैठक भी आयोजित की गई, जिसमें किसानों को वन्य खूबानी की खेती के महत्व की जानकारी दी गई।
2. राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा निधीयित परियोजना के तहत 10 मार्च 2006 को कूल्लू जिले के गांव सजला और कर्जन में तथा 12 और 13 मार्च, 2006 तक मंडी जिले के गांव झूंगी में "कारु एवं मुशकबाला की खेती" पर किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए दो कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।



प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

3. गांव धालवान में 14 मार्च 2006 को "औषधीय एवं सुरभित पादपों की व्यापारिक खेती" पर किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण किया गया, जिसके लिए राज्य वन विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा धन उपलब्ध कराया गया।



परियोजना के तहत आयोजित प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम

सहभागिता

1. श्री के.डी. शर्मा, भा.व.से. ने वन्यप्राणि संस्थान, देहरादून (उत्तरांचल) में 20 से 24 जून, 2005 तक भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए "वन्यप्राणि प्रबंध : विषय, चिन्ताएं और पद्धतियां" पर एक सप्ताह के अनिवार्य प्रशिक्षण में भाग लिया।
2. श्री के.एस. ठाकुर, उप वन संरक्षक ने 20 से 23 सितम्बर 2005 तक भारतीय सूदुर संवेदी संस्थान, देहरादून में निर्णयकर्ताओं के लिए सम्यक दृष्टिकोण पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
3. श्री सुरेन्द्र कुमार, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून में 18 से 28 अक्टूबर 2005 तक भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए दो सप्ताह के प्रोत्साहन सम्बद्ध सेवारत प्रशिक्षण में भाग लिया।

सहानुबंध और सहयोग

संस्थान ने हिमाचल प्रदेश और जम्मू व कश्मीर राज्य में वानिकी तथा वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत अन्य अनुसंधान एवं गैर-सरकारी संगठनों सहित हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू व कश्मीर राज्य के राज्य वन विभागों, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, शिमला; डॉ. व्हाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन; सी एस के हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर; हिमालयन जैव-संसाधन प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर; हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के साथ सतत संबंध बनाया। ट्रान्समिशन इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोपिक अध्ययनों के लिए केन्द्रीय आलू शोध संस्थान, शिमला के साथ भी सम्पर्क स्थापित किया गया। इसके अलावा, संस्थान सी एस के हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर और हिमालयन जैव-संसाधन प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर के साथ घनिष्ठ सहयोग से दो बाहर से सहायता-प्राप्त परियोजनाओं का कार्यान्वयन कर रहा है। इससे संस्थान को इन संगठनों के साथ विचारों और अनुसंधान निवेश को आपस में बांटने में मदद मिली है।

प्रकाशन

ब्राशुअर्स / तकनीकी बुलेटिन / पुस्तिकाएं

1. शर्मा, संदीप; के.एस. ठाकुर और नैना जोशी (2005) : जैट्रोफा : भविष्य का बायो-डीजल पौधा।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

2. ठाकुर, के.एस.; पी.एस. नेगी और संदीप शर्मा (2005) : चूली : पौधशाला एवं वृक्षारोपण तकनीक।
3. मीना बख्शी, सुरेन्द्र कुमार, राजेश शर्मा और के.एस. ठाकुर (2006) : मास वेजीटेशन प्रोपेगेशन ऑफ डैल्बर्जिया सिस्सू (रॉक्सब)।

अनुसंधान रिपोर्ट

रंजीत सिंह, सुरेन्द्र कुमार, एस. चक्रवर्ती और अशोक कुमार (2005) : रीसरजेन्स ऑफ इंडियन जीप्सी मॉथ, लीमेन्ट्रिया ऑबफूसकाटा (लेपिडोप्टेरा : लीमेन्ट्रिडा) ऑन वान ओक फॉरेस्ट ऑफ राजगढ़ फॉरेस्ट डिविजन, हिमाचल प्रदेश। रिसर्च रिपोर्ट नं० एच एफ आर आई/आर पी 1028, सितम्बर, 2005।

परामर्श

मैसर्स गुजरात अम्बूजा सीमेन्ट लि., दरलाघाट, जिला सोलन (हि.प्र.) के मार्गदर्शन और सभी आवश्यक निवेश, सहयोग और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने के लिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने "कासलोग" में इसके खनित क्षेत्रों में पारि-सुधार कार्यकलापों को करने के लिए "प्रारम्भ में जुलाई, 2005 से शुरू करके पांच साल की अवधि के लिए कम्पनी के साथ समझौता-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। इसे संस्थान के पारिस्थितिकी एवं जैवविविधता संरक्षण और वन संवर्धन एवं वृक्ष सुधार प्रभागों द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा। वर्ष 2005-2006 के दौरान संबंधित कार्य शुरू करने के लिए इस संस्थान को पहले ही रूपये 3,97,347/- की राशि प्राप्त हो चुकी है।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनियां

1. श्री सुरेन्द्र कुमार, भा.व.से., निदेशक, हि.व.अ.सं. और डॉ. के.एस. कपूर, समन्वयक, अनुसंधान ने भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 30 अप्रैल और 01 मई 2005 तक परिषद् की अनुसंधान नीति समिति की बैठक में भाग लिया।
2. डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-डी, 25 जून 2005 को व्हाई.एम.सी.ए. काम्प्लेक्स, शिमला में 'औषधि की पारम्परिक प्रणाली' पर कार्यशाला में भाग लिया।
3. डॉ. डॉ. के.एस. कपूर, वैज्ञानिक-ई ने भारत, शिमला में संयुक्त राज्य शैक्षिक फाउन्डेशन द्वारा एकीकृत हिमालयन अध्ययन संस्थान, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समर हिल (शिमला) और भारतीय वन सर्वेक्षण (उ.क्षे.), शिमला के सहयोग से 24 से 26 अगस्त, 2005 तक आयोजित "पहाड़ एवं पर्वत पारिस्थितिकी का संरक्षण" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
4. श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक-बी ने भा.वा.अ.शि.प., देहरादून और हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग द्वारा प्रायोजित डॉ. व्हाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौनी, सोलन में 21 और 22 अक्टूबर 2005 तक सम्पन्न "21वीं सदी में वानिकी के परिवर्तनशील सिद्धान्त" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
5. हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के सहयोग से स्टेट डायरेक्टर, वर्ल्ड वाइड फंड, शिमला, द्वारा 25 नवम्बर 2005 को आयोजित "पर्यावरणीय संरक्षण के लिए अधिनियम एवं नियम" पर एक दिवसीय कार्यशाला में इस संस्थान के अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
6. संस्थान द्वारा 27 दिसम्बर 2005 को वानिकी विस्तार रणनीति पुनरीक्षण पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस संस्थान के अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों के भाग लेने के अलावा, विभिन्न शोध संगठनों, विश्वविद्यालयों, गैर सरकारी संगठनों, किसानों और वन, बागवानी और पशुपालन जैसे राज्य वन विभाग का प्रतिनिधित्व करने वाले 25 सहभागियों ने भी कार्यशाला में भाग लिया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

7. श्री सुरेन्द्र कुमार, भा.व.से., निदेशक, हि.व.अ.सं. ने 23 और 24 जनवरी 2006 तक नई दिल्ली में वानिकी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन उपशमन पर कार्यशाला में भाग लिया।
8. श्री सुरेन्द्र कुमार, भा.व.से., निदेशक, के.एस. कपूर, समन्वयक (अनुसंधान और डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-डी ने व.अ.सं., देहरादून द्वारा 01 से 03 फरवरी 2006 तक आयोजित "वन संवर्धन सम्मेलन" में भाग लिया।
9. हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जम्मू व कश्मीर के सहयोग से जम्मू व कश्मीर राज्य वन विभाग के वरिष्ठ वन अधिकारियों के लिए 7 फरवरी 2006 को एक दिवसीय सम्पर्क बैठक का आयोजन किया।
10. डॉ. राजेश शर्मा, वैज्ञानिक-डी ने 9 से 10 फरवरी 2006 तक उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा आयोजित "वृक्ष जैवप्रौद्योगिकी - भारतीय परिदृश्य" पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
11. डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. आर.के. वर्मा और श्री जगदीश शर्मा ने 15 और 16 फरवरी 2006 तक राज्य औषधीय पादप बोर्ड, हरियाणा सरकार के सहयोग से हरियाणा राज्य वन विभाग द्वारा आयोजित "औषधीय पादपों की खेती व संरक्षण" पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
12. श्री सुरेन्द्र कुमार, भा.व.से., निदेशक, हि.व.अ.सं., ने 20 और 21 मार्च 2006 तक सम-विश्वविद्यालय, देहरादून में भारत में वानिकी शिक्षा : विषय एवं सुअवसर:" पर कार्यशाला में भाग लिया।
13. श्री सुरेन्द्र कुमार, भा.व.से., निदेशक, हि.व.अ.सं. ने 22 और 23 मार्च, 2006 तक व.अ.सं., देहरादून में अनुसंधान नीति समिति के बैठक में भाग लिया।
14. डॉ. के.एस. कपूर, वैज्ञानिक डी और डॉ. आर.के. वर्मा, वैज्ञानिक डी ने 22 और 23 मार्च, 2006 तक डॉ. व्हाई.एस. परमार विश्वविद्यालय यू एच एफ, नौनी, सोलन में हिमाचल प्रदेश के विशेष संदर्भ में शिवालिकों में बंजरभूमि विकास पर राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया।
15. श्री के.डी. शर्मा, भा.व.से., उप वन संरक्षक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने इन्डस हॉस्पिटल, शिमला में 23 मार्च 2006 को आपदा प्रबंध पर एक दिवसीय संगोष्ठी में भाग लिया।
16. डॉ. रंजीत सिंह, वैज्ञानिक डी ने जीव विज्ञान विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में 15 से 17 मार्च 2006 तक कीट विज्ञान के तीन दिवसीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया।
17. श्री पी.एस. नेगी, अनुसंधान अधिकारी, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, ने वन्यप्राणि प्रभाग, सराहन, शिमला द्वारा आयोजित गांव रक्षम, तहसील-सांगला, जिला किन्नौर में औषधीय पादप के पौधशाला प्रवर्धन एवं विपणन पर एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. श्री आर.पी.एस. कटवाल, पूर्व महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. और अब अतिरिक्त महानिदेशक वन (वन्यप्राणि), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने 9 जून 2005 को संस्थान का भ्रमण किया।
2. डॉ. देव दत्त, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय तेल बीज एवं वनस्पति तेल विकास बोर्ड (नोवोड) गुडगाँव ने बोर्ड द्वारा निधीयित और "हिमाचल प्रदेश में स्थानीय समुदायों के लिए सर्वोत्कृष्ट रोपण पदार्थ का विकास, वन्य खूबानी की मॉडल रोपण तकनीकों की स्थापना" शीर्षक परियोजना के तहत जारी अनुसंधान एवं प्रदर्शन कार्यकलापों के मूल्यांकन एवं पुनरीक्षण के लिए 24 से 26 अगस्त 2005 तक संस्थान का भ्रमण किया।